सांख्य दर्शन

भारतीय दर्शन के प्रधानतः दो भेद हैं : 1. आस्तिक तथा 2. नास्तिक

वेद द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो को प्रामाणिक तथा सत्य मानने वाला दर्शन आस्तिक है तथा इसके विपरीत वेदविरोधी तथा उसमें श्रद्धा न रखने वाले को नास्तिक दर्शन कहते हैं। आस्तिक दर्शन छः हैं : 1. सांख्य दर्शन – सांख्य 'संख्या' इस शब्द से निष्पन्न है क्योंकि सांख्य दर्शन 24 या 25 तत्त्वों का प्रतिपादन करता है जो इस प्रकार हैं – पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियों के विषय, मन, पञ्चमहाभूत, मूल प्रकृति, महत्, अहंकार तथा पुरुष।

(i) सत्कार्यवाद – इसके अनुसार कार्य कारण में अव्यक्त रूप से सदा विद्यमान रहता है। यह सिद्धान्त परिणामवाद के नाम से भी प्रसिद्ध है।

(ii) प्रकृति – सांख्य दर्शन में प्रकृति को संसार का मूल कारण माना गया है। प्रकृति जड़ तथा एक है। यद्यपि वह एक है तथापि उसमें सक्रियता रहती है।

(iii) पुरुष – सांख्य दर्शन में पुरुष चेतन है परन्तु निष्क्रिय है। जब प्रकृति और पुरुष आपस में मिलते हैं तब इस संसार की उत्पत्ति होती है क्योंकि पुरुष की चेतना का प्रभाव प्रकृति पर पड़ने से उसमें विकार होता है।

(iv) तीन गुण – सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति के तीन गुण हैं – सत्त्व, रजस् तथा तमस्। इन तीन गुणों की साम्यावस्था का नाम ही प्रकृति है।

मोक्ष – संसार के आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक – इन तीन दुःखों का अन्त मोक्षप्राप्ति से होता है। सांख्य के अनुसार प्रकृति के तीन गुणों सत्त्व, रजस् तथा तमस की साम्यावस्था ही मोक्ष कहलाती है।

ईश्वर – ईश्वर के सम्बन्ध में सांख्य दर्शन की दो शाखाएँ हैं। पहली जो ईश्वर को मानते है। उनके अनुसार ईश्वर के बिना किसी भी वस्तु की उत्पत्ति होना असंभव है। दूसरी जो ईश्वर को नहीं मानते। उनके अनुसार, कार्य कारण में पहले से ही विद्यमान रहता है और ईश्वर अपरिवर्तनशील है। जब उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा तब वह संसार का कारण कैसे हो सकता है क्योंकि सांख्य के अनुसार कार्य कारण का ही परिवर्तित रूप है।